छत पर बागवानी

छत पर बागवानी

वर्तमान परिदृश्य में हमारे आहार का एक बड़ा हिस्सा हानिकारक रसायन युक्त सब्जियां है। इसके चलते पोषक तत्वों की आवश्यकता पूर्ति की बजाय हम ऐसे जहर का सेवन कर रहे है जो कैंसर जैसी गंभीर बिमारियों का कारण बनता है। आमतौर पर सब्जियाँ शहर के समीप के गांवों में ही उगायी जाती है। दूसरी ओर गृहवाटिकाओं का प्रचलन भी शहरों में धीरे–धीरे बढ़ता जा रहा है। बड़े शहरों में जनसंख्या वृद्धि के कारण शहर में बने हुए घरों में जगह की कमी, बाजार में आसमान छूती सब्जियों के भाव, रसायन युक्त उत्पाद, असंतुलित भोजन जैसी समस्यायें आम बात हो गयी है। इन सभी समस्याओं का निदान है रूफटॉप गार्डनिंग (छत पर बागवानी)। यह एक ऐसी विधि है, जिसमें अतिरिक्त जगह के बिना भी सब्जियां उगाई जा सकती है। इसमें सब्जियों को छत के ऊपर उगाया जाता है इसलिए इसे ''टेरिस गार्डनिंग'' के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान समय में बाजार में पौधे उगाने के लिए प्लास्टिक की थैलियाँ भी सहजता से उपलब्ध हो जाती है, जिनको ग्रो–बैग के नाम से जाना जाता है। यह प्लास्टिक पराबैंगनी प्रतिरोधी होती है, जिसके कारण यह धूप में भी खराब नहीं होती।

छत पर सब्जियां उगाने के फायदे :

1. रूफटॉप गार्डनिंग स्वास्थ्य की दृष्टि से एक बहुत अच्छा शौक है। यह न केवल व्यक्ति को सप्ताह भर कुछ घंटे के लिए व्यस्त रखता है।
2. जिन घरों में घर के आगे या पीछे कोई जगह उपलब्ध नहीं है वहां पर इस विधि द्वारा सब्जियों का उत्पादन किया जा सकता है।
3. परिवार के लिए ताजी एवं रसायन मुक्त सब्जी सुगमता से हर समय उपलब्ध हो जाती है। साथ ही समय और धन की बचत होती है।
4. इस तकनीक में सब्जियाँ लगाना सरल व सस्ता है। जरूरी नही की महंगे गमलों का उपयोग किया जाए, बल्कि अनुपयोगी वस्तुओं जैसे डिब्बे, बाल्टी आदि में भी सब्जियां आसानी से उगाई जा सकती है।
5. इसे एक जगह से दूरी जगह स्थानांतरित आसानी से संभव है।
6. यह आपके घर की सुन्दरता के साथ आपके स्वास्थ्य में भी कई गुना बढ़ा देगी।
7. यह आपको ताजगी भरी हरियाली का सुकून मानसिक शान्ति प्रदान करेगी।

रूफटॉप गार्डनिंग कैसे करें :

गमलों का चयन : आजकल बाजार में विभिन्न प्रकार के पॉलीथीन बैग उपलब्ध है, जिनको ग्रो बैग के नाम से जाना जाता है, इनका आकार एवं ऊंचाई भिन्न–भिन्न तरह की होती है। अतः इनका चुनाव उगाई जाने वाली सब्जी पर निर्भर करता है। गमलों का चयन करते समय यह जरूर ध्यान रखे की गमले के नीचे पानी की निकासी के लिए

छेद हो, जिससे की पानी गमलो में एक जगह इकट्ठा ना रहे। पॉलीथीन बैग के अलावा सीमेन्ट, मिट्टी के पुराने बर्तन, लकड़ी या टीन का डिब्बा अथवा प्लास्टिक के बने हुए गमले भी सब्जी उगाने के लिए उपयोग में जाये जा सकते है। उन्हीं गमलों का चयन करें, जिनका आकार 12 इंच से अधिक हो।

गमलो की तैयारी : गमलों के नीचे अतिरिक्त पानी की निकासी के लिए यदि छेद नही हो पानी एकत्रित होने से जड़ो में सड़न की समस्या हो जाएगी। अतः गमलों में छेद अवश्य करें। जहां तक संभव हो हल्के रंग के गमलों का चयन करें। यदि गहरे रंग का गमला है तो उस पर हल्के रंग की पुताई कर दें, जिससे पौधे का अत्यधिक गर्मी से बचाव किया जा सके। लोहे के डिब्बों की जगह मिट्टी के गमलों को वरीयता दें क्योंकि लोहे के गमले अत्यधिक गर्म व ठण्डे होकर पौधे को नुकसान पहुंचा सकते है। टमाटर, खीरा, बैंगन जैसे पौधे के लिए बड़े गमले या बक्से का चयन करें (24–30 इंच का आकार कम से कम)।

गमलों की भराई : गमलों में खेत की उपजाऊ मिट्टी के अलावा अच्छी सड़ी–गली गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट को उचित मात्रा में मिला कर भरें। आजकल मिट्टी की जगह नारियल का बुरादा (कोकोपीट) भी उपयोग में लिया जाता है। इसमें वायु संचार अच्छा होता है तथा यह देर से अपघटित होता है। इसमें पानी सोखने की क्षमता अधिक रहती है। पोटेशियम विद्यमान होने के कारण अलग से पोटेशियम की आवश्यकता नहीं पढ़ती है। 1 हिस्सा उपजाऊ मिट्टी + 1 हिस्सा कोकोपीट + 1 हिस्सा वर्मीकम्पोस्ट का मिश्रण उपयुक्त है।

जगह का चुनाव : गमलें में सब्जियां उगाने के लिए छत, बरामदे, खिड़कियों का इस्तेमाल किया जा सकता है। गमलों को रखने के लिए हमेशा ऐसी जगह का चुनाव करें जहां दिन में कम से कम 6 से 8 घंटे सूर्य की रोशनी पड़ती हो अन्यथा छाया में पौधे अपना भोजन नहीं बना पाते है, जिसके कारण उनके विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

गमलों को रखने/जमाने का तरीका : गमले को हमेशा इस तरह से व्यवस्थित करना चाहिये कि एक पौधे की छाया दूसरे पौधे पर ना पड़े। दक्षिण की तरफ हमेशा कम ऊँचाई वाले पौधे जैसे– धनियां, मेथी, पालक लगाएँ व उत्तर की तरफ मे वे पौधे रखें जिनकी लम्बाई अपेक्षाकृत अधिक हो। इसके अलावा दो गमलों के बीच थोड़ी जगह छोड़े जिससे उनमें धूप के साथ–साथ खरपतवार निकालने एवं पानी लगाने में भी सुविधा रहे।

सब्जियों का चुनाव : घर की छत के ऊपर लगभग सभी तरह की सब्जियाँ उगा सकते है। सब्जियों का चयन, उगाये जाने वाले पात्र, स्थान, मौसम आदि कारकों पर निर्भर करता है। इसमें टमाटर, मिर्च, बैंगन के अलावा हरी सब्जियाँ (पालक, धनिया, मेथी,

लेट्यूस), बेलवाली सब्जियां (लौकी, करेला, ककड़ी, तुरई, कद्दू इत्यादि), जड़वाली सब्जियाँ (गाजर, मूली, शलजम, चुकंदर इत्यादि), बल्ब वाली सब्जियाँ (प्याज, लहसुन, आलू, लीक), बीन्स, भिण्डी, फूलगोभी, पत्तागोभी, इत्यादि उगा सकते है।

खाद एवं पोषक तत्व : गमले भरते समय वर्मीकम्पोस्ट को उचित अनुपात में डालना चाहिये यदि वर्मीकम्पोस्ट उपलब्ध नहीं है तो उसमें अच्छी तरह सड़ी गली गोबर की खाद डाले। इसके अलावा पानी में घुलनशील उर्वरक भी बाजार में उपलब्ध है उनका इस्तेमाल भी गमलों में कर सकते है।

सिंचाई प्रबंधन : गमलों की सिंचाई प्रबंधन का ध्यान रखना अतिआवश्यक है। बैग/गमलों में पानी इतना ही डाले कि छिद्र से बाहर न निकले। अत्यधिक पानी अथवा कम पानी दोनों ही स्थिति में पौधे की पैदावार पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। पानी के साथ पोषक तत्व भी बहकर निकलने की संभावना रहती है, जिसका प्रभाव पौधे की बढ़वार पर पड़ता है। पानी के साथ पोषक तत्व भी बहकर निकलने की संभावना रहती है, जिसका प्रभाव पौधे की बढ़वार पर पड़ता है।

गमलों में लगी सब्जियों की देखभाल : गमलों से समय–समय पर उगे हुए खरपतवार हाथ से निकाल देना चाहिए। इसके अलावा कीट एवं बिमारीयाँ आने पर इनके नियंत्रण के लिए जैविक तरीके अपनाएं। आजकल बाजार में विभिन्न तरह के जैविक कीटनाशक जैसे नीम का तेल 30 प्रतिशत, 5 मि0ली0 /लीटर पानी का भी उपयोग कर सकते है।

कुछ जरूरी ध्यान रखने योग्य बातें :

1. कीट एवं बिमारीयों के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशकों का उपयोग करें व जहाँ तक हो सकते जैविक तरीको को अपनाएं।
2. गमलों में उगाए जाने वाले बीज व पौध अच्छी गुणवत्ता वाली स्वस्थ हो। प्रमाणिक स्रोत से ही लें।
3. बेल वाली सब्जियों जैसे तुरई, लौकी, करेला आदि का रस्सी व लकड़ी का सहारा दें।
4. औषधीय पौधों जैसे ग्वारपाठा, तुलसी आदि को भी जरूर लगाएं।
5. जो लोग रूफटॉप गार्डनिंग करना चाहते है वह अपने घर को बनाते वक्त अपने घर की छत मजबूत बनाये और जिनके घर पहले से बने हुए है वह पौधे लगाने के लिए कम वजन वाली वस्तुओं का प्रयोग करें।
6. छत के ऊपर वे सभी पौधे लगाये जा सकते है, जिनकी ऊँचाई बहुत ज्यादा न हो। बड़े वृक्षों के पौधों को यहां तैयार अवश्य किया जा सकता है। छत खराब न हो, अतः एक मोटी पॉलीथीन की चादर बिछाकर उसी पर ये गमले रखते है।

अधिक जानकारी के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली के विषय विशेषज्ञों से समय–समय पर सम्पर्क बनाये रखें।